अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी
परमधर्मपीठीय परिषद

# ख्रीस्तीय एवं जैन धर्मानुयायी
# एक साथ मिलकर शांति-संस्कृति का पोषण करें

महावीर जन्म कल्याणक दिवस 2022

वाटिकन सिटी

प्रिय जैन मित्रो,

इस वर्ष 14 अप्रैल को मनाये जा रहे तीर्थंकर श्री वर्धमान महावीर की 2620 वीं जयंती के शुभ अवसर पर अन्तरधार्मिक परिसंवाद सम्बन्धी परमधर्मपीठीय परिषद आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करती है। इस स्मरणोत्सव का आनन्दकारी भाव आपके दिलों, घरों और समुदायों में स्वास्थ्य और ख़ुशी, शांति और समृद्धि उँडेल दे!

एक ओर जहाँ विश्व के कुछ भागों में कोविद-19 महामारी की एक नई लहर का जोखिम हम सभी के लिए चिंता का विषय बन रहा है, वहीं दूसरी ओर, विश्व के कुछ अन्य भागों में युद्ध के विनाशकारी प्रभाव से हम बेहद दुखी हैं। कई भू-भागों में तनाव और हिंसा की बढ़ती घटनाएं, यहां तक कि धर्म के नाम पर भी, उन लोगों के लिये विक्षुब्ध करनेवाला एवं चिंताजनक तथ्य बन गयीं हैं जो शांति, स्वतंत्रता और सद्भाव के लिये तरसते हैं। शांति-निर्माण के प्रयासों को कमज़ोर और निराश करनेवाली प्रतीत होती आक्रामकता और हिंसा की कुरूप अभिव्यक्तियों के बीच शांति की संस्कृति का पोषण करना, सर्वहित और हमारे 'सामान्य घर' की ख़ातिर, एक अति आवश्यक आह्वान बन जाता है। अधिक शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण हेतु इस बुलावे से प्रेरित होकर हम आपके साथ कुछ ऐसे उपायों को साझा करना चाहते हैं जिनके द्वारा हम, ख्रीस्तीय एवं जैन दोनों, शांति की संस्कृति को पोषित कर शांति के लक्ष्य की प्राप्ति में योगदान दे सकते हैं।

स्वार्थ, अभिमान और लोभ के अतिरिक्त, विश्व में हम जो तनाव, हिंसा एवं युद्ध देखते हैं, उनके कारण प्रायः भय और अविश्वास होते हैं। जब-जब ऐसा होता है तब-तब मानव परिवार के भ्रातृभाव की जन्मजात बुलाहट इसकी पहली शिकार बनती है (दे. सन्त पापा फ्रांसिस का विश्व पत्र फ्रातेल्ली तूती, 26)। बड़े पैमाने पर व्याप्त ग़रीबी और अन्याय जैसी कई सामाजिक समस्याओं के मूल में मानव बंधुत्व की क्षति या अभाव है। जब भय और अविश्वास हावी हों, या इस साझा विश्वास की कमी हो कि हम सभी भाई-बहनें हैं, तब शांति और स्थायित्व सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है।

अधिक शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण हेतु, सभी पुरुषों और महिलाओं के बीच बंधुत्व की सार्वभौमिक इच्छा के पुनः प्रवर्तन की दिशा में काम करने की आवश्यकता है (दे. फ्रातेल्ली तूती, 8)। इस सन्दर्भ में, यदि लोगों के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का होना है, तो हमारी समझ में एक आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है कि हम एक-दूसरे के साथ किस तरह का सम्बन्ध रखते हैं। इसमें लोगों और प्रकृति के बीच का संबंध भी शामिल है। अपनी-अपनी धार्मिक परंपराओं की शिक्षाओं का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए हम सभी विश्वासियों को चाहिये कि हम एक बार फिर यह स्वीकार करें कि हम सभी एक विशाल मानव परिवार के हैं; कि हम सब समान रूप से गरिमा और अधिकारों से सम्पन्न भाई-बहनें हैं; कि हमें एक दूसरे की ज़रूरत है और हम एक दूसरे के प्रति और प्रकृति की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार हैं। "जब तक हम दूसरों को अपनों के रूप में नहीं अपितु अन्यों के रूप में देखेंगे" (सन्त पापा फ्रांसिस, *अंतधार्मिक बैठक*, उर का मैदान, ईराक, 6 मार्च, 2021) तब तक हम स्थायी शांति की कल्पना नहीं कर सकते, चाहे वह परिवारों में हो या समुदायों में, समाज में और विश्व में भी क्यों न हो।

जिन बातों की पुष्टि अभी-अभी यहाँ की गई है, वे हमें शांतिपूर्ण समाज के निर्माण के लिए आवश्यक अवयव प्रदान करती हैं। इन सामग्रियों का सबसे अच्छा पोषण परिवारों में होता है जहाँ बच्चे, माता-पिता तथा बड़ों के उदाहरण से इन महान मूल्यों का आत्मसात करते हैं। जैसा कि संत पापा फ्राँसिस ठीक ही पुष्टि करते हैं, "परिवार सभी भ्रातृभाव का स्रोत है, और इस रूप में वह शांति की नींव और उसका प्रथम मार्ग है, इसलिये कि प्रेम को अपने आस-पास की दुनिया में फैलाना ही उसकी बुलाहट है"(विश्व शांति दिवस के लिए संदेश, 1 जनवरी 2014)। इसके अतिरिक्त, शैक्षणिक संस्थान छात्रों में सम्मान, करुणा, दया, अहिंसा और सद्भाव के मूल्यों को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन्हें विविधता का सम्मान और उसकी सराहना करने के लिए सक्षम बनाकर शांति की संस्कृति के पोषण में अपरिहार्य भूमिका निभा सकते हैं। शान्ति को बढ़ावा देनेवाले मूल्यों और समाचारों के प्रसारण में सोशल मीडिया की भी प्रमुख भूमिका है। अपने आध्यात्मिक और नैतिक संसाधनों के बल पर शांति को बढ़ावा देने में समस्त धर्मों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें विशेष रूप से धार्मिक नेता शामिल हैं जो विश्वासियों के मन और हृदय में शांति के बीज बोने का दायित्व रखते हैं। इस दिशा में विभिन्न धार्मिक परंपराओं के लोगों के बीच सेतु-निर्माण, मैत्री-स्थापना और समाज में प्रेम को पोषित करने में अन्तरधार्मिक संवाद एक प्रभावशाली उपकरण है। व्यक्तियों और समुदायों के बीच चंगाई और पुनर्मिलन के लिए काम करना और उन्हें शांति के कारीगरों में रूपान्तरित करना भी शांति की संस्कृति को पोषित करने का एक अभिन्न अंग है।

अपने-अपने धार्मिक विश्वासों में जड़ीभूत विश्वासियों के रूप में तथा बंधुत्व की साझा दृष्टि एवं पारस्परिक ज़िम्मेदारी की भावना रखनेवाले लोगों के रूप में, हम, ख्रीस्तीय और जैन, सदैव तथा सब कहीं, छोटे और बड़े तरीकों से, शांति की संस्कृति को पोषित करें। ऐसा हम धैर्य और दृढ़ता के साथ, एकजुटता होकर सर्वहित की निरंतर खोज में, अन्य धार्मिक परम्पराओं के विश्वासियों और सभी शुभचिन्तकों के साथ मिलकर करें।

आप सभी को महावीर जन्म कल्याणक दिवस की मंगलकामनाएँ!

कार्डिनल मिगुएल एंगेल अयूसो गिक्सो, एमसीसीजे
अध्यक्ष

मोन्सिन्ज्ञोर इंदुनिल कोडिथुवाक्कु जनकरत्ने कंकनमलगे
सचिव

**PONTIFICAL COUNCIL FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE**
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.pcinterreligious.org/